बौद्धिक एकाग्रता

बौद्धिक एकाग्रता। अभी तक हमने चर्चा की, वो थी मन की एकाग्रता के बारे में जिससे मन एकाग्र हो जाये, हिले नहीं। इसको बाबा कहते हैं अचल, अडोल अवस्था। मन की स्थिति चलायमान न हो। अभी चर्चा करेंगे बौद्धिक एकाग्रता के बारे में। उसमें आती है निश्चयात्मक एकाग्रता। एकाग्रता होगी निश्चय से। अगर शंका रहेगी, किसी बात पर प्रश्न उठता रहेगा, अभी तक विश्वास नहीं हो रहा है तो बुद्धि स्थिर कैसे होगी? बुद्धि स्थिर तब होती है जब व्यक्ति को कोई बात समझ में आ जाये। कन्विक्शन (Conviction) से कन्वर्शन (conversion) हो जाता है। निश्चय से रूपान्तर अर्थात् परिवर्तन हो जाता है। जब व्यक्ति में विश्वास वा दृढ़ निश्चय आ जाता है तब वह बदलता है। मनुष्य से देवता बनना शुरू तब करेगा जब वह समझ लेगा और उसे विश्वास आ जायेगा कि यही जीवन का सच्चा रास्ता है। हमारी बुद्धि तब ही एकाग्र हो सकती है जब हमारी बुद्धि निर्माणकारी (Constructive) हो, न कि विनाशकारी (Destructive)। हमारी बुद्धि जोड़ने वाली हो, न कि तोड़ने वाली। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि वे हमेशा दूसरों की टीका-टिप्पणी (आलोचना) करते रहते हैं। वास्तव में आलोचना करना हमारा काम नहीं है, हम ज्ञानी हैं, योगी हैं और सामने वाला भी ज्ञानी और योगी है। वह भी समझता है कि मुझे क्या करना है, क्या नहीं करना है। लेकिन देखा गया है कि आमतौर पर इन्सान दूसरों की आलोचना इसीलिए ही करता है कि सामने वाले का अपमान हो या उसको लोग बेवकूफ़ समझें।

मनुष्य को सबसे बडी देन है सदबुद्धि

संसार में मनुष्य को सबसे बड़ी देन क्या है? सद्बुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि जिसको बाबा कहते हैं पारस बुद्धि। बुद्धि कितनी बड़ी कमाल की चीज़ हैं! बाबा ने हमारे योग का नाम क्या कहा है? बुद्धियोग। बुद्धि जिसकी विशाल है, बुद्धि जिसकी शिव बाबा के साथ है वही सच्चा योगी है। योगी की बुद्धि शक्तिशाली निर्णय करती है। किस समय क्या करना है, कितना करना है, कैसे करना है, उसका यह निर्णय यथार्थ होगा और शक्तिशाली होगा। ऐसे निर्णय तभी होगा जब उसमें गोल्डन थॉट्स होंगे। एक न्यायाधीश निर्णय कैसे करता है? फलाने-फलाने क़ानून के अनुसार फलानी-फलानी सज़ा। इस फलाने सेक्शन के अनुसार इसने कोई ग़लती नहीं की इसलिए इसको बरी किया जाये। निर्णय किसी क़ानून के अन्तर्गत किया जाता है। लॉ के एप्लिकेशन का नाम ही जजमेंट (निर्णय) है। नियम ही पता नहीं होगा तो निर्णय क्या करोगे? निर्णय शक्ति आपकी उतनी बढ़ेगी जितनी आपकी ज्ञान की शक्ति बढ़ेगी। जितने बाबा के गोल्डन थॉट्स आप में हैं, उतना अच्छा निर्णय आपका होगा। बाबा की जितनी भी मुरली की प्वाइंटस् हैं, ये हमारी निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए हैं, हमारी बुद्धि को गोल्डन बनाने के लिए हैं। लॉ को आप नहीं जानेंगे तो ग़लत

निर्णय कर बैठेंगे। श्रीमत पूरी नहीं जानेंगे तो ग़लत इच्छायें आ जायेंगी। ग़लत रास्ते पर चले जायेंगे। ग़लत कर्म हो जायेंगे और फिर पछताते रहेंगे। निर्णय हमारा शक्तिशाली हो, स्थिर हो, श्रीमत पर आधारित हो और बाबा के ज्ञान से पूर्ण हो। कई लोग समझते हैं कि जो 8-10 नियम हैं वही श्रीमत है जैसे अमृतवेले उठना, मुरली क्लास करना इत्यादि। लेकिन इनके अलावा बाबा का हर महावाक्य श्रीमत है।

विवेक-शक्ति

विवेक शक्ति जिसको हम निर्णय शक्ति कहते हैं। जब तक हमारा सद्विवेक जाग्रत न हो, हमने निर्णय न किया हो कि यह संसार अब विनाश होने वाला है, यह नरक बन चुका है, यह आसुरी संसार है, यह तमोप्रधान हो चुका है, यह निःसार हो चुका है और हमको जाना है सतयुग की ओर जहाँ सुख का भण्डार है, हमको जाना है वापिस घर, समय आ चुका है, तब तक हम योग की गहराई में जा नहीं सकते, अनभुव कर नहीं सकते। मम्मा हमेशा यही सुनाती थी कि समय अपना फैसला दे रहा है, भगवान अपना फैसला दे रहा है, अब तुम भी अपना फैसला करो कि करना क्या है। जब तक मनुष्य अपने जीवन में अन्तिम निर्णय नहीं लेता, तब तक कार्य पूर्ण रूप से आरम्भ नहीं होता। अगर होता भी है तो ठीक ढंग से नहीं होता। जिसका मन अस्थिर होगा, हिलने-डोलने वाला होगा वह व्यक्ति खुद ही मूँझा हुआ होगा कि क्या करूँ, क्या न करूँ, क्या सही है, क्या गलत है। इसलिए जिसका जितना प्रबल निर्णय है, जिसमें जितना यह विवेक जाग्रत हो चुका है, जिसमें ये ज्ञान की बातें ठोस रीति से बैठ गयी हैं, आप देखेंगे उसमें योग की पराकाष्ठा भी उतनी ही रहेगी। जिस दिन उसके मन में बाबा के बारे में, आत्मा के बारे में या और किसी ज्ञान के विषय में संशय होगा, आप देखेंगे उस दिन उसकी स्थिति डाँवाडोल होगी। इसलिए सशवत योग के लिए हमारी विवेक शक्ति अथवा निर्णय शक्ति भी अटल हो। योग के अनुभव करने के लिए हमारी इच्छा शक्ति, विचार शक्ति, निर्णय शक्ति साथ देंगी।

बुद्धि-शक्ति

निर्णय शक्ति अर्थात् बुद्धि शक्ति भी शक्तिशाली होनी चाहिए। अगर यह शक्तिशाली नहीं होगी तो हमारा योग भी शक्तिशाली नहीं होगा। बुद्धि के शक्तिशाली होने का क्या मतलब है? सांसारिक रूप से हमने जो देखना था देख लिया, हमने जो समझना था समझ लिया, हमने जो अनुभव करना था कर लिया। लौकिक वाले तो विश्वास रख बैठे हौ कि अगर समाज को सुधारना है या विश्व में सुख-शान्ति स्थापित करनी है तो राज्य सत्ता, धर्म सत्ता और विज्ञान सत्ता ही कुछ कर सकती हैं। लेकिन हमने तो देख लिया, अनुभव कर लिया कि यह कार्य कोई मनुष्य कर ही नहीं सकता। यह तो सर्वशक्तिवान भगवान का कार्य है। वह अभी कर रहा है। क्योंकि सुख-

शान्ति की जननी पवित्रता है और पवित्रता रूपी वरदान अथवा वर्सा एक परमपिता परमात्मा से ही मिल सकता है। यह निर्णय उन लोगों की बुद्धि नहीं कर सकी परन्तु हमने यह समझ लिया है, हमने निर्णय कर लिया है। अगर हमारी बुद्धि ने यह निर्णय कर लिया, व्यक्तियों को, गुरुओं को, शास्त्रों को, धर्मनेताओं को सबको देख लिया। इन सारी बातों को याद करने से हमारी बुद्धि सब तरफ से सिमट जायेगी, बुद्धि उपराम हो जायेगी। अभी हमें यह निर्णय लेना है। इसको सद्विवेक कहते हैं, दिव्य बुद्धि कहते हैं सत्य-असत्य को, पाप-पुण्य को, अच्छाई-बुराई को समझकर फैसला कर लें। जितनी हमारी बुद्धि पक्की हो जाती है तब यह दुनिया परायी लगेगी। इस प्रकार, निर्णय शक्ति का प्रयोग करके, जितना-जितना बुद्धि को सब तरफ से समेटकर एक शिवबाबा की याद में लगायेंगे तब योग में गहरा अनुभव होगा। जब समझ लिया, जान लिया, पहचान लिया, देख लिया और फैसला कर लिया तो बुद्धि और कहीं नहीं जायेगी, एक बाप में टिकी रहेगी। मम्मा कई बार मुरली सुनाती थी कि समय तो फैसला कर रहा है, बाप भी फैसला कर रहा है, अब आप अपनी तकदीर का फैसला कर लो कि मुझे क्या बनना है। जब तक आप अपना फैसला नहीं करते, तब तक आप की कश्ती चलती नहीं दूसरी तरफ। जब तक फैसला नहीं करेंगे, जब तक जहाज का लंगर उठा नहीं होगा, बँधी हुई रस्सी खोली नहीं होगी तब तक उसकी यात्रा आरम्भ होगी ही नहीं। उसी प्रकार, जब तक आप अपने मन से उपराम नहीं होंगे, निर्णय नहीं लेंगे तब तक आपकी बुद्धि की यात्रा आरम्भ होगी ही नहीं। जब तक हमारी सब तरफ की रस्सियाँ टूट नहीं जायेंगी, हमारी बुद्धि में यह नहीं आयेगा कि एक बाप के सिवाय हमारी कश्ती को कोई पार लगाने वाले नहीं है, तब तक योग में गहरे अनुभव नहीं होंगे। बुद्धि का और एक कार्य है योजना बनाने का। कोई भी कार्य हम करते हैं उससे पहले योजना बनानी होती है। जो कार्य सुनियोजित नहीं होगा, वह कार्य सफल नहीं होगा। हम जितना भी धार्मिक साहित्य देखते हैं, तो पाते हैं कि योगी योजना-बद्ध वाला होता है। वह हर कार्य योजनाबद्ध तरीके से करता है। उसका काम ऊटपटांग, ऊपर-ऊपर से नहीं होगा, सुव्यवस्थित रूप से और सुनियोजित रूप से होगा। उसकी सारी दिनचर्या, कार्य करने के तरीके योजना-बद्ध होंगे। दृढ़तापूर्वक करना, जो करता है उसको पूरा करना इत्यादि-इत्यादि उसकी विशेषतायें होंगी। योजना के साथ-साथ उस योजना के अनुकूल चलने वाली बुद्धि भी होगी। ऐसे नहीं कि यह कार्य अच्छा है, इसको करो। उसको करते समय ओर कोई अच्छा काम मिला या याद आया तो पहले वाले को छोड़ दो और नया करते रहो। उससे अच्छा और एक कार्य मिला तो दूसरा भी छोड़ दो और तीसरा करते रहो। ऐसा नहीं। योगी का हर कार्य परिपूर्ण होता है और समय से पहले होता है।

बी.के.जगदीशचंद्र हसीजा